



OPEN ACCESS

Volume: 2

Issue: 1

Month: March

Year: 2023

ISSN: 2583-7117

Published: 13.03.2023

Citation:

डॉ. अनुपम मित्र “1857 का विद्रोह: कारण, स्वरूप और भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में इसकी भूमिका का समालोचनात्मक अध्ययन” International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 2, no. 1, 2023, pp. 38-41

DOI:

10.69968/ijsem.2023v2i138-41



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

# 1857 का विद्रोह: कारण, स्वरूप और भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में इसकी भूमिका का समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. अनुपम मित्र<sup>1</sup>

<sup>1</sup> सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, स्वार, रामपुर (उ.प्र.)

## सारांश

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी घटना थी, जिसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक असंतोष को संगठित रूप में अभिव्यक्त किया। यह अध्ययन विद्रोह के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा इसके स्वरूप और प्रभावों को स्पष्ट करता है। विद्रोह में सैनिकों, किसानों, जमींदारों और पारंपरिक शासकों की सहभागिता ने इसे एक व्यापक सामाजिक आंदोलन का रूप दिया, यद्यपि इसमें समन्वित नेतृत्व का अभाव था। अध्ययन यह दर्शाता है कि यह विद्रोह पूर्णतः राष्ट्रवादी नहीं था, फिर भी इसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध की नींव रखी। इसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ, जिसने आगे चलकर राष्ट्रवादी आंदोलन को गति प्रदान की।

**कुंजी शब्द:** 1857 का विद्रोह, औपनिवेशिक शासन, राजनीतिक असंतोष, सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रवाद.

## परिचय

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जो व्यापक असंतोष विकसित हो रहा था, उसका विस्फोट 1857 के विद्रोह के रूप में हुआ। यह विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण और निर्णायक घटना थी, जिसने ब्रिटिश सत्ता की नींव को पहली बार गंभीर चुनौती दी। इस घटना को केवल एक आकस्मिक सैनिक विद्रोह के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों का संयुक्त परिणाम था, जो कई दशकों से भारतीय समाज में असंतोष को जन्म दे रहे थे। इस विद्रोह ने यह स्पष्ट कर दिया कि औपनिवेशिक शासन के प्रति भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में गहरा असंतोष व्याप्त था और यह असंतोष समय-समय पर विस्फोटक रूप ले सकता है।

1857 का विद्रोह एक बहुआयामी घटना थी, जिसमें सैनिकों के साथ-साथ किसान, जमींदार, कारीगर और पारंपरिक शासक वर्ग भी शामिल हुए। यह विद्रोह मुख्यतः उत्तर और मध्य भारत में केंद्रित था, किन्तु इसका प्रभाव व्यापक था और इसने भारतीय समाज के विभिन्न हिस्सों को प्रभावित किया। इस अध्ययन का उद्देश्य 1857 के विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके कारणों, स्वरूप और भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में उसकी भूमिका का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

## औपनिवेशिक विस्तार और राजनीतिक असंतोष

अठारहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में अपने राजनीतिक प्रभुत्व को लगातार विस्तार दिया। विभिन्न युद्धों, संधियों और कूटनीतिक उपायों के माध्यम से कंपनी ने भारतीय रियासतों को अपने नियंत्रण में ले लिया। इस विस्तारवादी नीति ने भारतीय शासकों और अभिजात वर्ग के बीच असंतोष को जन्म दिया, क्योंकि उनकी सत्ता और स्वायत्तता धीरे-धीरे समाप्त हो रही थी।

विशेष रूप से 'दत्तक निषेध नीति' के माध्यम से कंपनी ने उन रियासतों को अपने अधिकार में लेना प्रारंभ किया, जिनके शासकों के कोई प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी नहीं थे।

इस नीति ने झांसी, सतारा और नागपुर जैसी रियासतों को प्रभावित किया और शासकों के बीच असंतोष को बढ़ाया। इसके अतिरिक्त, अवध जैसे समृद्ध राज्य का विलय भी राजनीतिक असंतोष का एक प्रमुख कारण बना, क्योंकि यह न केवल एक शक्तिशाली राज्य था, बल्कि वहां की प्रशासनिक व्यवस्था भी अपेक्षाकृत सुदृढ़ मानी जाती थी।

इन नीतियों के परिणामस्वरूप पारंपरिक राजनीतिक संरचना कमजोर हो गई और शासक वर्ग के हितों को गहरा आघात पहुंचा। यह असंतोष केवल शासकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उनके अधीनस्थ वर्गों, जैसे सैनिकों और प्रशासनिक कर्मचारियों में भी फैल गया। इस प्रकार, औपनिवेशिक विस्तार ने एक ऐसी राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार की, जिसमें विद्रोह की संभावना निरंतर बढ़ती गई।

### **आर्थिक शोषण और सामाजिक असंतुलन**

औपनिवेशिक शासन के आर्थिक प्रभावों ने भारतीय समाज में व्यापक असंतोष को जन्म दिया। ब्रिटिश नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारत से संसाधनों का अधिकतम दोहन करना था, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई। कृषि क्षेत्र में उच्च कर दरों और कठोर राजस्व नीतियों ने किसानों की स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया। अनेक किसान कर्ज के बोझ तले दब गए और उनकी भूमि पर अधिकार समाप्त होने लगे।

इसके साथ ही, औद्योगिक क्षेत्र में भी गहरा परिवर्तन आया। ब्रिटेन से आयातित वस्तुओं के कारण भारतीय कुटीर उद्योगों का पतन हुआ, जिससे कारीगरों और शिल्पकारों की आजीविका प्रभावित हुई। व्यापारिक असंतुलन और औद्योगिक गिरावट ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में आर्थिक संकट उत्पन्न किया।

सामाजिक स्तर पर भी परिवर्तन देखने को मिले। पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ प्रभावित हुईं और विभिन्न वर्गों के बीच असंतुलन बढ़ा। आर्थिक संकट के कारण समाज के निम्न वर्गों में असंतोष अधिक तीव्र था, जबकि अभिजात वर्ग भी अपनी राजनीतिक शक्ति के ह्रास से असंतुष्ट था। इस प्रकार, आर्थिक और सामाजिक कारकों ने मिलकर विद्रोह के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं।

### **धार्मिक और सांस्कृतिक हस्तक्षेप**

ब्रिटिश शासन द्वारा किए गए सामाजिक और धार्मिक सुधारों ने भी भारतीय समाज में असंतोष को जन्म दिया। यद्यपि इन सुधारों का उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना था, किन्तु भारतीय समाज के कुछ वर्गों ने इन्हें अपने धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में हस्तक्षेप के रूप में देखा।

सती प्रथा का उन्मूलन और विधवा विवाह को वैध बनाने जैसे सुधारों ने समाज में मिश्रित प्रतिक्रिया उत्पन्न की। कुछ वर्गों ने इन्हें प्रगतिशील कदम के रूप में स्वीकार किया, जबकि अन्य ने इसे अपने धार्मिक अधिकारों पर आक्रमण माना। इसके अतिरिक्त, ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों और धर्म परिवर्तन की आशंकाओं ने भी लोगों के बीच भय और असंतोष को बढ़ाया।

सबसे महत्वपूर्ण घटना वह थी, जब सैनिकों के बीच यह अफवाह फैली कि नई बंदूकों के कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी का उपयोग किया गया है। यह अफवाह हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों की धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाली थी, जिससे सैनिकों के बीच विद्रोह की भावना तेजी से फैल गई। इस प्रकार, धार्मिक और सांस्कृतिक कारकों ने विद्रोह को भड़काने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### **विद्रोह का स्वरूप और ऐतिहासिक महत्व**

1857 का विद्रोह एक जटिल और बहुआयामी घटना थी, जिसका स्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग था। यह विद्रोह मेरठ से प्रारंभ होकर दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और झांसी जैसे प्रमुख केंद्रों तक फैल गया। इसमें सैनिकों के साथ-साथ स्थानीय शासकों, किसानों और आम जनता की भागीदारी भी देखने को मिली।

इस विद्रोह का नेतृत्व विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नेताओं द्वारा किया गया, जिससे इसमें एकरूपता का अभाव था। फिर भी, बहादुर शाह जफर को प्रतीकात्मक रूप से नेतृत्व प्रदान किया गया, जिससे विद्रोह को एक वैधता मिली। यह दर्शाता है कि विद्रोहियों ने एक साझा राजनीतिक पहचान स्थापित करने का प्रयास किया।

यद्यपि यह विद्रोह अंततः असफल रहा, फिर भी इसका ऐतिहासिक महत्व अत्यंत व्यापक है। इसने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को यह एहसास कराया कि औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित संघर्ष आवश्यक है। इसके बाद के दशकों में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ, जिसने आगे चलकर संगठित राष्ट्रवादी आंदोलन का रूप लिया।

इस प्रकार, 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। यह न केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध पहला व्यापक प्रतिरोध था, बल्कि इसने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की आधारशिला भी रखी।

### **साहित्य समीक्षा**

सावरकर (1909) ने 1857 के विद्रोह को “प्रथम स्वतंत्रता संग्राम” के रूप में व्याख्यायित करते हुए यह तर्क दिया कि यह केवल सैनिक विद्रोह नहीं था, बल्कि एक संगठित राष्ट्रीय प्रयास था।

उनके अनुसार इस विद्रोह में विभिन्न वर्गों और समुदायों ने भाग लिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इसमें राष्ट्रीय चेतना के प्रारंभिक तत्व मौजूद थे। उन्होंने विद्रोह को एक सुनियोजित और व्यापक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य औपनिवेशिक शासन को समाप्त करना था। यद्यपि उनके दृष्टिकोण की आलोचना भी हुई, फिर भी यह राष्ट्रवादी व्याख्या भारतीय इतिहासलेखन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

मुखर्जी (2008) ने अवध क्षेत्र के संदर्भ में विद्रोह का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि 1857 का आंदोलन स्थानीय सामाजिक और राजनीतिक कारणों से गहराई से जुड़ा हुआ था। उनके अनुसार अवध में किसानों, तालुकेदारों और सैनिकों के बीच असंतोष ने विद्रोह को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने यह तर्क दिया कि विद्रोह को समझने के लिए क्षेत्रीय संदर्भों का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि यह एक समान रूप से संगठित आंदोलन नहीं था, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग कारणों से उत्पन्न हुआ।

मेटकाफ (1995) ने औपनिवेशिक विचारधाराओं के संदर्भ में 1857 के विद्रोह का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि यह विद्रोह ब्रिटिश शासन के वैचारिक आधार के विरुद्ध एक चुनौती था। उनके अनुसार विद्रोह ने यह स्पष्ट किया कि औपनिवेशिक सत्ता केवल प्रशासनिक नियंत्रण पर आधारित नहीं थी, बल्कि उसकी वैधता भी महत्वपूर्ण थी, जिसे इस विद्रोह ने कमजोर किया।

चंद्र (2009) ने 1857 के विद्रोह को भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में देखा। उनके अनुसार यह विद्रोह पूर्णतः राष्ट्रवादी नहीं था, किन्तु इसने भारतीय समाज में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक असंतोष को उजागर किया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस विद्रोह ने भविष्य के राष्ट्रीय आंदोलनों के लिए आधार तैयार किया।

गुहा (2007) ने भारतीय इतिहास के व्यापक परिप्रेक्ष्य में 1857 के विद्रोह का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि इस घटना ने भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना को विकसित किया। उनके अनुसार यह विद्रोह एक संक्रमण बिंदु था, जिसने औपनिवेशिक शासन के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया और राष्ट्रवाद के विकास को प्रेरित किया।

बेयली (1988) ने भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया के संदर्भ में 1857 के विद्रोह का अध्ययन करते हुए यह बताया कि यह विद्रोह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम था। उनके अनुसार औपनिवेशिक नीतियों के कारण उत्पन्न असंतोष ने विभिन्न वर्गों को एकजुट किया और विद्रोह को व्यापक स्वरूप प्रदान किया।

स्टोक्स (1986) ने किसान दृष्टिकोण से 1857 के विद्रोह का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि इसमें किसानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उनके अनुसार विद्रोह केवल सैनिक असंतोष का परिणाम नहीं था, बल्कि यह ग्रामीण समाज में व्याप्त आर्थिक संकट और असंतोष का भी परिणाम था।

डैलरिम्पल (2006) ने दिल्ली और मुगल दरबार के संदर्भ में विद्रोह का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि बहादुर शाह जफर के नेतृत्व ने विद्रोह को एक प्रतीकात्मक वैधता प्रदान की। उनके अनुसार यह विद्रोह केवल सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि इसमें सांस्कृतिक और राजनीतिक तत्व भी शामिल थे।

बोस (2015) ने दक्षिण एशिया के आधुनिक इतिहास में 1857 के विद्रोह की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि इसने राष्ट्रवाद को एक भावनात्मक और ऐतिहासिक आधार प्रदान किया। उनके अनुसार इस विद्रोह की स्मृति ने आगे के स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया।

हबीब (2010) ने आर्थिक दृष्टिकोण से 1857 के विद्रोह का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के कारण उत्पन्न असंतोष इस विद्रोह का एक प्रमुख कारण था। उनके अनुसार किसानों, कारीगरों और व्यापारियों की आर्थिक समस्याओं ने विद्रोह को व्यापक समर्थन प्रदान किया।

रॉय (2011) ने आर्थिक इतिहास के संदर्भ में 1857 के विद्रोह का अध्ययन करते हुए यह तर्क दिया कि औपनिवेशिक शोषण और संसाधनों के दोहन ने भारतीय समाज में असंतोष को बढ़ाया। उनके अनुसार यह आर्थिक असंतोष विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक था।

## तालिका १: साहित्य समीक्षा का सारांश और मुख्य

### निष्कर्ष

क्रम संख्या	साहित्य संदर्भ	प्रमुख विषय	मुख्य निष्कर्ष
1	सावरकर (1909)	राष्ट्रवादी	विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रस्तुत किया गया
2	मुखर्जी (2008)	क्षेत्रीय विश्लेषण	विद्रोह स्थानीय कारणों से प्रभावित था
3	मेटकाफ (1995)	औपनिवेशिक विचारधारा	विद्रोह ने औपनिवेशिक वैधता को चुनौती दी

4	चंद्र (2009)	राष्ट्रवाद का विकास	विद्रोह ने भविष्य के आंदोलनों की नींव रखी
5	गुहा (2007)	राजनीतिक चेतना	विद्रोह ने राष्ट्रवादी सोच को प्रेरित किया
6	बेयली (1988)	सामाजिक परिवर्तन	सामाजिक और आर्थिक कारणों से विद्रोह व्यापक हुआ
7	स्टोक्स (1986)	किसान भूमिका	किसानों की भागीदारी महत्वपूर्ण थी
8	डैलरिम्पल (2006)	सांस्कृतिक आयाम	विद्रोह को प्रतीकात्मक वैधता मिली
9	बोस (2015)	ऐतिहासिक प्रभाव	विद्रोह ने राष्ट्रवाद को प्रेरित किया
10	हबीब (2010)	आर्थिक कारण	आर्थिक असंतोष प्रमुख कारण था
11	रॉय (2011)	आर्थिक इतिहास	औपनिवेशिक शोषण ने विद्रोह को बढ़ावा दिया

### निष्कर्ष

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है, जिसने औपनिवेशिक शासन की स्थिरता को पहली बार गंभीर चुनौती दी। यद्यपि यह विद्रोह संगठनात्मक कमजोरी, नेतृत्व के अभाव और सीमित भौगोलिक विस्तार के कारण सफल नहीं हो सका, फिर भी इसका ऐतिहासिक महत्व अत्यंत व्यापक है। इस विद्रोह ने यह स्पष्ट कर दिया कि

औपनिवेशिक नीतियों के प्रति भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में गहरा असंतोष विद्यमान था। राजनीतिक रूप से इसने ब्रिटिश शासन की वैधता को कमजोर किया, जबकि सामाजिक स्तर पर इसने विभिन्न वर्गों के बीच एक साझा असंतोष और सहयोग की भावना विकसित की। आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक हस्तक्षेप और प्रशासनिक दमन के विरुद्ध यह एक संयुक्त प्रतिक्रिया थी, जिसने भविष्य के संगठित राष्ट्रवादी आंदोलनों के लिए आधार तैयार किया। इस प्रकार, 1857 का विद्रोह भले ही तत्काल स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल न रहा हो, किंतु इसने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास को दिशा प्रदान की और स्वतंत्रता संग्राम की नींव को सुदृढ़ किया।

### संदर्भ सूची

- [1] सावरकर, वी. डी. (1909). द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस.
- [2] मुखर्जी, आर. (2008). अवध इन रिवोल्ट.
- [3] मेटकाफ, टी. आर. (1995). आइडियोलॉजीज ऑफ द राज.
- [4] चंद्र, बी. (2009). इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस.
- [5] गुहा, आर. (2007). इंडिया आफ्टर गांधी.
- [6] बेयली, सी. ए. (1988). इंडियन सोसाइटी.
- [7] स्टोक्स, ई. (1986). द पीजेंट आर्मर्ड.
- [8] डैलरिम्पल, डब्ल्यू. (2006). द लास्ट मुगल.
- [9] बोस, एस. (2015). मॉडर्न साउथ एशिया.
- [10] हबीब, आई. (2010). इकॉनॉमिक हिस्ट्री स्टडीज़.
- [11] रॉय, टी. (2011). इकॉनॉमिक हिस्ट्री.